SUNDAY | 14.11.2021 | कार्तिक शुक्ल एकादशी विक्रम संवत-2078

उत्तर प्रदेश

अमर उजाला

PAGE NO 11 MIDDLE

नाटक 'भगवद्ज्जुकीयम' में हुआ आत्मा-शरीर के महत्व पर विमर्श

बरेली। एसआरएसएस रिद्धिमा में चल रहे थिएटर फेस्टिवल इंद्रधनुष में पांचवें रोज नाटक 'भगवद्ज्जुकीयम' का मंचन किया गया। बोधायन के लिखित इस नाटक में ज्ञान के आधारभूत तत्व की खोज का प्रयास दिखाया गया है। इसमें आत्मा और शरीर के महत्व पर विमर्श होता है, जो हास्य की परिस्थियां पैदा करता है। इसका दर्शकों ने भरपूर आनंद लिया।

थिएटर फेस्टिवल में नाटक भगवद्ज्जुकीयम का मंचन करते कलाकार।

नाटक 'भगवद्ज्जुकीयम' गुरु परिव्राजक और उनके शिष्य शांडिल्य के बीच मनोरंजक वाद विवाद से आरंभ होता है। गुरु केवल आत्मा के ही अस्तित्व को मानते हैं और भौतिक संसार को नकारते हैं, जबकि शिष्य सांसारिक सौंदर्य और सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति को ही जीवन का सार मानकर आध्यात्म की खिल्ली उड़ाता है।

दोनों अपने-अपने तर्क देते हुए एक उद्यान में पहुंचते हैं और समाधि लगाते हैं। यहीं से नाटक का तानाबाना शुरू होता है। तमाम घटनाक्रम से गुजरता हुआ नाटक आगे बढ़ता है और लोगों को हंसने पर मजबूर करता है।

अंत में यमदूत दोनों के प्राणों की अदला बदली कर सब पहले की तरह कर देते हैं। सभी पुनः प्रसन्न हो जाते हैं, किंतु आत्मा और शरार को लेकर गुरु और शिष्य दोनों की विचारधाराएं मिल जाती हैं। दोनों ज्ञान की खोज में फिर लीन हो जाते हैं। संवाद